International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

भारत में कृषि संकट– चुनौतियाँ, कारण और समाधान

जय बहादुर उत्तम

शोधार्थी (राजनीति विज्ञान विभाग), बी.बी.ए.यू, लखनऊ

सार संक्षेप

भारत का कृषि संकट एक बहुपक्षीय मुद्दा है। कृषि संकट के मुख्य कारकों में किसानों की आय में कमी, टुकड़े–टुकड़े भूमि, अस्थिर मौसम के प्रारूप और प्रौद्योगिकी की पर्याप्त पहुंच की कमी शामिल है। इसके अतिरिक्त, ग्रामीण समुदायों के बीच सामाजिक–आर्थिक असमानता किसानों के संकट की अधिकता को बढ़ाती है, जिससे किसानों की असमर्थता बढ़ती है और किसानों की आत्महत्या की घटनाएं होती हैं। इसके अलावा नीति की अपर्याप्तताएं और भारतीय कृषि परिदृश्य को व्यापक सामाजिक–राजनीतिक गतिविधियों जैसे कि उद्योगीकरण और शहरीकरण के लिए भूमि अधिग्रहण के साथ प्रभावित होना भी इस संकट के बढ़ने में योगदान करता है। भारत के कृषि संकट का समाधान करने के लिए एक बहुपक्षीय दृष्टिकोण अत्यंत आवश्यक है। सर्वप्रथम नीति सुधार आवश्यक है ताकि किसानों को उचित प्रतिपूर्ति, क्रेडिट तक पहुंच, और पर्यावरणीय कृषि प्रथाओं को प्रोत्साहित किया जा सके। इसके अलावा, ग्रामीण बुनियादी संरचना, सिंचाई सुविधाओं, और प्रौद्योगिकी के अवलोकन में निवेश कृषि उत्पादकता और जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशीलता को मजबूत कर सकता है। इसके अतिरिक्त, बेहतर सामाजिक सुरक्षा को मजबूत किया जाना चाहिए ताकि परेशान किसानों को संबल प्राप्त हो सके, आत्महत्या की घटनाओं को कम किया जा सके। इसके अतिरिक्त किसान सहकारी संघों को सशक्त बनाने और उन्हें मूल्य श्रृंखलाओं में शामिल करने से बाजार पहुंच और विमर्श शक्ति को मजबूत किया जा सकता है। भारत के कृषि संकट की उलझन को समझने के लिए एक समग्र रणनीति की आवश्यकता है जो वर्तमान चुनौतियों और मौलिक समस्याओं दोनों का समाधान करे। कृषि समृद्धि के लिए एक उत्तरदायी वातावरण को बढ़ावा देकर भारत सतत् एवं समावेशी विकास की दिशा में आगे बढ़ सकता है।

शब्द कुंजी – कृषि संकट, ग्रामीण विकास, नीति सुधार, आर्थिक स्थायित्व, कृषि उत्पादकता आदि।

प्रस्तावना

भारत में कृषि संकट की जड़ें ऐतिहासिक रूप से गहरी हैं जो सामाजिक–आर्थिक, राजनीतिक, और पर्यावरणीय कारकों के जटिल संगम से उत्पन्न होती हैं। ऐतिहासिक रूप से भारत के कृषि परिदृश्य की विशेषता छोटे और टुकड़े–टुकड़े भूमि के स्वामित्व, आधुनिक प्रौद्योगिकी और क्रेडिट सुविधाओं की सीमित पहुंच, और मानसूनी बारिशों पर आश्रित होती है। समय के साथ जल्दी से बढ़ती जनसंख्या ने भूमि संसाधनों पर दबाव बढ़ा दिया है जिससे भूमि की उपलब्धता दुर्लभ हुयी और कृषि उत्पादकता मे कमी कती आयी है। इसके अलावा अप्रभावी कृषि मूल्य निर्धारण तंत्र और ग्रामीण बुनियादी संरचना में अपर्याप्त निवेश जैसे नीतिगत निर्णयों ने किसानों के सामने आने वाली चुनौतियों को और भी बढ़ा दिया है। सामाजिक–राजनीतिक गतिविधियों में उद्योगीकरण और शहरीकरण के लिए भूमि अधिग्रहण के साथ कृषि समुदायों की उपेक्षा में योगदान किया गया है। जलवायु परिवर्तन के कारण होने वाले मौसमी अनिश्चितताओं की पृष्ठभूमि पर कृषि संकट में और भी तेजी से बढ़ावा हुआ है, किसानों को ऋण, त्रासदी, और निराशा के चक्र में धकेल दिया है। भारत की कृषि चुनौतियों का सामाजिक–आर्थिक और वातावरणिक कारणों के इस जटिल उत्थान को समझना तथा कृषि संकट का समाधान करने और सतत ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने के लिए प्रभावी रणनीतियों का निर्माण आवश्यक है।

भारत में कृषि संकट एक परिपूर्ण तथ्यात्मक घटना है, जो व्यापक शैक्षिक अनुसंधान और प्रमाणात्मक साक्ष्य पर आधारित है। इस क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण काम ***'द अन्क्वाइट वुड्स– हिमालय में पारिस्थितिकीय परिवर्तन और किसानों की प्रतिरोधक्षमता'*** नामक पुस्तक द्वारा **रामचंद्र गुहा (1989)** किया गया है, जो हिमालय क्षेत्र में पर्यावरणीय प्रदूषण, कृषि विपत्ति, और किसानों के प्रदर्शनों के बीच के जटिल संवाद का अध्ययन करती है। इसके अतिरिक्त, ***'फार्मर्स' सुइसाइड्स और भारत में कृषि संकट– एक अन्वेषणात्मक अध्ययन'*** में **के. नागराज (2008)** द्वारा प्रदान की गई जिसमें, किसानों की आत्महत्या और अधिक व्यापक कृषि संकट को समझने में महत्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य प्रदान करते हैं। **मुख्ययोजक एम0 एस0 स्वामीनाथन** जैसे विद्वानों द्वारा नीति विश्लेषण, जैसे ***'भारत में कृषि संकट' (2009)***, के माध्यम से भारतीय कृषि के सामने आने वाली चुनौतियों पर महत्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त, ***राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय*** (एनएसएसओ) और ***राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड)*** जैसे संगठनों से रिपोर्ट्स भारतीय कृषि के विभिन्न पहलुओं पर सांख्यिकीय डेटा और विश्लेषण प्रदान करते हैं, जिसमें किसानों की आय, ग्रामीण कर्ज, और क्रेडिट तक पहुंच शामिल है। ये विद्वानगण और प्रायोगिक अध्ययन भारत में कृषि संकट, उसके पीछे छिपे कारण, और संभावित समाधानों को समझने में एक परिपूर्ण समझ प्रदान करते हैं, जो नीति निर्माताओं, शोधकर्ताओं, और कार्यकर्ताओं को इस महत्वपूर्ण मुद्दे का समाधान करने के लिए एक सशक्त आधार प्रदान करते हैं।

कृषक, भारतीय अर्थव्यवस्था की अधारशिला हैं। किसान देश की अहम जरूरत रोटी–कपड़ा–मकान की आपूर्ति के लिए अनमोल योगदान प्रदान करते हैं। भारत में लगभग 60 प्रतिशत लोगों का जीविका कृषि पर निर्भर है। ये न केवल अपने परिवार का पालन–पोषण करते हैं बल्कि, देश के आर्थिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। लेकिन उनकी दुर्दशा अकसर दुःखद होती है। वे अधिकांशतः अधिकारहीन और गरीब होते हैं जिन्हें धान, गेहूं, और अन्य फसलों के उत्पादन में बड़ी मेहनत करनी पड़ती है। वे अकसर संकट में पड़ जाते हैं जैसेकि कर्ज का बोझ, अनुपातित मौसम, और किसान आंदोलानों मे किसानों की ब्यापक सहभागिता का अभाव। इसलिए, किसानों को सम्मान और समर्थन की आवश्यकता है ताकि वे अपने काम को आत्मविश्वासपूर्वक और सफलतापूर्वक अंजाम दे सकें।

कृषि संकट

कृषि संकट भारतीय किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण मुद्दा है जो किसानों को आर्थिक, सामाजिक, और मानसिक स्तर पर प्रभावित करता है। इसमें अन्यायपूर्ण उपज दर, समुचित बाजार व्यवस्था की कमी, कर्ज का भार, और जलवायु परिवर्तन आदि शामिल हैं। इससे किसानों की आर्थिक स्थिति अत्यधिक कमजोर होती है और उन्हें स्वावलंबी नहीं बनाया जा सकता। इस संकट के समाधान के लिए समर्थन और सहायता की आवश्यकता है, जैसे कि नए किसान उत्पादों के लिए उन्नत बाजार अवसर, कृषि बीमा, और तकनीकी तरीकों का उपयोग करके फसल की उपयोगिता बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी का अधिक उपयोग। इसके अलावा, सरकारी नीतियों को किसानों की समस्याओं को समझने और समाधान के लिए सकारात्मक रूप में लागू किया जाना चाहिए।

एक शोध में शोधार्थी ने अपने अध्ययन ***"कृषि संकट को समझना– एक सहभागी और गुणात्मक प्रणालीगत विश्लेषण"*** में कृषि प्रणाली के विभिन्न आयामों पर विचार करते हुए भारत में जटिल कृषि संकट की पड़ताल करता है। यह संकट उप–प्रणालियों और तत्वों की कमी, सिंथेटिक इनपुट और केंद्रीकृत बाजारों पर निर्भरता, फसलों की जलवायु परिस्थितियों और कीटों के प्रति संवेदनशीलता, अनुपातहीन समर्थन मूल्य के जोखिम और जीविकोपार्जन के खर्चों में वृद्धि जैसे कारकों से प्रेरित है। कृषि प्रणाली के महत्वपूर्ण कारकों में बदलाव के रुझान और पैटर्न को 1995 से 2015 तक प्रलेखित किया गया, जिससे संकट के बारे में जानकारी मिली। अध्ययन में छह गांवों के किसानों के साथ सहभागी अभ्यास शामिल है, जो संकट के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान करता है, **शीरीष बी0केदार, (2018)**।

किसानों के सामने आने वाली चुनौतियाँ

1. **ऋण जाल–** किसानों के लिए एक बड़ी चुनौती है। धारकों के लिए यह एक अन्यायपूर्ण स्थिति हो सकती है जहां उन्हें अधिकाधिक ऋण लेना पड़ता है ताकि वे अपने खेती या परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा कर सकें। यह ऋण चक्र उन्हें गहरे कर्ज की गिरफ्त में डाल सकता है जिससे उनकी आर्थिक स्थिति और स्वतंत्रता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। ऋण लेने के उत्साह में किसान अक्सर उस साधारण समाधान पर नहीं ध्यान देते हैं जो उन्हें अधिकाधिक ऋण से बचा सकता है, जैसे कि किसान क्रेडिट कार्ड या सरकारी सहायता योजनाएं। इससे उन्हें सकारात्मक संपत्ति या उत्पादकता की बजाय ऋणों की चारों ओर की बढ़ती लेन–देन के जोखिम में पड़ना पड़ता है।
2. **भूमि के उर्वरत्व का पतन–** एक महत्वपूर्ण विषय है जो कृषि और पर्यावरण संबंधित मुद्दों पर प्रभाव डालता है। इसका मुख्य कारण अनुजैविक कृषि प्रणाली, असंतुलित जल संसाधन का प्रबंधन, और वातावरणीय बदलाव हो सकता है। भूमि का अधिक उपयोग, अज्ञात कृषि प्रणाली का उपयोग, और जल संसाधनों के अनावश्यक उपयोग के कारण भूमि का पतन होता है। इसके परिणामस्वरूप मिट्टी की उपज क्षमता कम हो जाती है, जिससे खाद्य सुरक्षा और गरीब किसानों का जीवन अस्थिर होता है। भूमि के पतन का समाधान उत्पादक और पर्यावरण के संतुलन को संबोधित करने के लिए कृषि प्रणालियों और प्रबंधन अभियानों की विस्तारपूर्वक योजनाओं के माध्यम से किया जा सकता है।
3. **अनियमित मौसम वितरण–**अनियमित मौसम के पैटर्न एक सामान्य प्राकृतिक प्रक्रिया हैं जो मौसम के अनुभव में अस्थिरता को दर्शाते हैं। इसके कुछ मुख्य कारण निम्नलिखित हैं–
    1. **जलवायु परिवर्तन–** जलवायु परिवर्तन के परिणामस्वरूप, मौसम के पैटर्न में अनियमितता बढ़ जाती है। इसमें गर्मी, अचानक बारिश, या लंबी सूखे की प्रकृति के विपरीत परिस्थितियाँ शामिल हो सकती हैं।
    2. **प्राकृतिक घटनाएं–** प्राकृतिक घटनाएं, जैसे कि वायुमंडलीय प्रक्रियाएँ और अद्भुत समुद्री गतिविधियाँ, अनियमित मौसम के पैटर्न को प्रभावित कर सकती हैं।

    इन कारणों के संयोग से, अनियमित मौसम के पैटर्न में वैश्विक और स्थानीय स्तर पर विविधता होती है, जिससे खेती, जलवायु अनुकूलता, और अर्थव्यवस्था पर प्रभाव पड़ता है।
4. **बाजार की अस्थिरता**–इसके विभिन्न कारण हैं। मुख्य कारण अग्रलिखित हैं–
    1. **अर्थव्यवस्था की सांद्रता–** अर्थव्यवस्था की स्थिति में अस्थिरता, जैसे की मंदी या उच्चाधिकार, बाजार की अस्थिरता को प्रभावित कर सकती है।

2. **राजनीतिक और आर्थिक निर्देशिकाएं**– राजनीतिक घटनाएं और नीतियों के बदलने के कारण बाजार में अस्थिरता आ सकती है।
3. **अंतरराष्ट्रीय प्रभाव**– विदेशी बाजारों में होने वाली घटनाओं का प्रभाव अंतरराष्ट्रीय बाजारों में अस्थिरता को उत्पन्न कर सकता है।
4. **प्राकृतिक आपदाए** – प्राकृतिक आपदाओं जैसेकि बाढ़, भूकंप, और तूफान, व्यापार को प्रभावित कर सकती है।
5. **विपणन तकनीकों में परिवर्तन**– नई विपणन तकनीकों की शुरुआत या परिवर्तन बाजार में अस्थिरता पैदा कर सकता है।

ये सभी कारण बाजार की अस्थिरता में विविधता और अपूर्णता को लाते हैं, जिससे उत्पादकों, उपभोक्ताओं, और बाजार के संचालकों के लिए अनिश्चितता का सामना करना पड़ता है।

5. **तकनीकी अवधारणा की कमी**– यह एक सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक मुद्दा है जो अन्य कई समस्याओं का कारण बन सकता है। यह किसी व्यक्ति या समुदाय के लिए संचार और तकनीकी ज्ञान के अभाव को निर्दिष्ट करता है। यह असमर्थता और आधारभूत तकनीकी सीखने की क्षमता को प्रभावित कर सकती है, जो उपभोक्ता तक जानकारी की पहुंच को प्रभावित कर सकती है।
तकनीकी अज्ञानता के कारण कई लोग डिजिटल जगत के अनुसार पहुंच में पीछे रह सकते हैं, जिससे उन्हें आधुनिक समाज में सक्रिय भागीदारी करने में मुश्किल हो सकती है। इसके अतिरिक्त तकनीकी अवधारणा की कमी व्यावसायिक और व्यक्तिगत उत्पादकता को भी प्रभावित कर सकती है, क्योंकि यह काम करने की क्षमता को प्रभावित कर सकती है और नई तकनीकों और उपकरणों का सही उपयोग नहीं कर सकती है। इसलिए, तकनीकी अवधारणा को सुधारने के लिए शिक्षा, प्रशिक्षण, और सामाजिक संरचनाओं में निवेश की आवश्यकता है।
6. **पशु/निराश्रित गोवंश** – नीलगाय (बनरोझ), जंगली सुंअर तथा बंदर आदि भी किसानो की फसलो को नुकसान पहुंचा रहे हैं। वर्तमान में निराश्रित गोवंश खेती–बाड़ी को व्यापक पैमाने पर क्षति पहुंचा रहे हैं। भारत एक धार्मिक परम्पराओं का देश है। परिस्थितियां अनुकूल न होने के कारण यही पशु आज किसानो के लिए अन्ना या आवारा पशुओं का रूप धारण कर लिए है जो किसानों के लिए नवीन चुनौती बन गये हैं।

कृषि संकट के कारण

आज वैश्वीकरण समूचे संसार में अपने पांव पसारता जा रहा है इसका असर कृषि क्षेत्र में भी स्पष्ट तौर पर दिखाई पड़ने लगा है। दुनियां के कई देशों (फ्रांस, जर्मनी, इटली, स्पेन आदि) में किसान आन्दोलन कर रहे हैं भारत के किसान भी आन्दोलन की राह (दिल्ली 2020–21,फरवरी–मार्च 2024) पर हैं। जिसके कारण निम्नलिखित हैं–

1. **आस्था व अर्थव्यवस्था का सम्बन्ध** – भारत में धर्म, परम्परा व संस्कृति आदि लोगों में रची बसी है। गाय को माता कहा जाता है, तथा हिन्दू धर्म में इसके प्रति आस्था रखी जाती है। एक समय गाय हमारी कृषि की बुनियाद थी क्योकि गाय के बछड़े कृषि में जुताई एवं ढुलाई (बैलगाड़ी) के काम आते थे परन्तु, परिवर्तन प्रकृति का नियम है और गाय भी इससे अछूती नहीं रह सकती। गाय को दूध की मात्रा, लैक्टोमीटर एवं जर्सी (शंकर नस्ल) गाय ने, तो वहीं बछड़ो या बैलों को ट्रैक्टर ने प्रभावित किया या इनकी उपयोगिता में कमी ला दी है। आस्था के चलते (वर्तमान सरकार) गोवंश की बिक्री एवं कटान पर कानूनी पहरा शख्त होने की वजह से किसान अब गाय को अपने खूंटे पर बाध कर रखनें में आर्थिक तौर पर असमर्थ है। अतः वह इसको खुला छोड़ देते हैं। यही गोवंश बेसहारा गोवंश के रूप में खेती–बाड़ी को नुकसान पहुंचा रहे हैं।
2. **विश्व व्यापार संगठन** – इसके तहत सरकारी खरीद तथा समर्थन मूल्य कम कर दिये जाने से कृषि क्षेत्र पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है, जबकि विकसित देश अनेकों प्रकार के बहाने बनाकर अपने किसानो को भारी मदद पहुँचा रहे हैं।
3. **मुक्त व्यापार समझौता** – इसके अन्तर्गत वस्तुओं एवं सेवाओं को अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं के पार खरीदी एवं बिक्री की जाती है, जिसके लिए अत्यन्त कम या न्यून सरकारी शुल्क, कोटा तथा सब्सिडी जैसे नियम आरोपित किये जाते हैं।
4. **लागत में वृद्धि** – बीज से लेकर बाजार तक प्रयुक्त होने वाले समस्त आदानों में बढोतरी हुई है। जैसे– शंकर बीज, डीजल, ट्रैक्टर किराया, श्रमिक आदि के मूल्यों में वृद्धि।
5. **लाभकारी मूल्य का अभाव**– किसानों को अपनी उपज का लाभकारी मूल्य **(एम.एस. स्वामीनाथन के सूत्र C_2+50%)** नहीं मिल पाना।
6. **वर्षा** – जलवायु परिवर्तन का असर वर्षा पर भी पड़ा है जो निम्न रूपों में दिखाई देता है– अतिवृष्टि, ओलावृष्टि, अनियमित वर्षा एवं अल्पावधि वर्षा आदि।
7. **अनावृष्टि** – विभिन्न क्षेत्रों में समय–समय पर पड़ने वाले सूखा ने कृषि संकट को और घना किया है।

कृषि संकट का समाधान – कृषि संकट का समाधान करने के लिए एक संयुक्त (सरकार, वैज्ञानिक, कृषि मामलो के जानकार एवं किसानो) और समर्थनशील दृष्टिकोण आवश्यक है जो आर्थिक, सामाजिक, और पारिस्थितिक पहलुओं को समाहित करे। प्रमुख समाधानों में नीति

सुधार, प्रौद्योगिकी का अनुप्रयोग, संसाधनों की समान वितरण, और किसानों के सामाजिक सुरक्षा नेटवर्क को मजबूत करना शामिल है। कृषि संकट का समाधान करने के लिए निम्नलिखित प्रकार से समाधान किया जा सकता है–

1. **वर्षा जल का संग्रहण**–वर्षा जल का संग्रहण एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जो स्थलीय जलाशयों और भूमि में पानी को संचित करने में मदद करती है। यह सामाजिक, आर्थिक, और पर्यावरणीय लाभ प्रदान करता है।
2. **सिंचन क्षेत्र का विस्तार** – भारत में 140 मिलियन हेक्टेयर कृषि भूमि क्षेत्र है जिसका लगभग 48.8 प्रतिशत सिंचित क्षेत्र है। अतः सिंचन क्षेत्र में विस्तार अत्यंत आवश्यक है। सिचाई के लिए आधुनिक विधियों जैसे ड्रिप सिंचाई, स्प्रिंकलर सिचाई आदि को अपनाना होगा। इसके लिए किसानों का जागरूक एवं साधन सम्पन्न बनाया जाना चाहिए।
3. **कृषि सहायक उपकरणों की उपलब्धता** – सरकार किसानों को कम किराये एवं समय पर कृषि सहायक उपकरणों – ट्रैक्टर, कल्टीवेटर, रोटावेटर, बुवाई मशीन आदि की उपलब्धता ग्राम स्तर पर कराये।
4. **सतत कृषि के लिए किसानों को प्रोत्साहित करना**– पर्यावरणीय कृषि पद्धति जैसे कि जैविक व प्राकृतिक खेती को बढ़ावा, वन्य , जल संरक्षण तकनीकों को प्रोत्साहित करने से जलवायु परिवर्तन के लिए संवेदनशीलता बढ़ा सकती है और दीर्घकालिक उत्पादकता में सुधार कर सकती है।
5. **तकनीक के अवलोकन** – आधुनिक कृषि तकनीकों के पहुंच को सुविधाजनक बनाने के लिए, जैसे कि मौसम पूर्वानुमान उपकरण, और मेकानिज्ड कृषि उपकरण, उत्पादकता और कुशलता में सुधार के लिए इन तकनीकों का प्रखण्ड स्तर पर लागू किया जाना चाहिए।
6. **उपज के उचित मूल्य की गारंटी** – किसानों को कृषि उत्पादों का वाजिब दाम नहीं मिल पाता जिससे वे कर्ज के चक्रव्यूह में फस जातें हैं और वो खेती से मुह मोड़नें, पलायन करने और अन्ततः विवश होकर खुदकुशी जैसे कदम उठा लेते है। यदि उन्हें वाजिब दाम मिले तो वह ना तो खेती का पेशा छोड़े और न ही पलायन व प्राणांत जैसे मार्ग चुने।

निष्कर्ष

इस परिपूर्ण विश्लेषण के माध्यम से हमने देखा कि भारतीय कृषि के संकट के कई कारण हैं, जो न केवल किसानों की आर्थिक स्थिति को प्रभावित करते हैं, बल्कि देश के आर्थिक और सामाजिक विकास को भी रोकते हैं। इसे समझने और समाधान के लिए एक समर्थ और संयुक्त पहल आवश्यक है। समाधानों के रूप में, नीतियों में सुधार, प्रौद्योगिकी का उपयोग, संसाधनों का समान वितरण और किसानों के सामाजिक सुरक्षा नेटवर्क को मजबूत करना महत्वपूर्ण है। इन सभी क्षेत्रों में सुधार किया जाना चाहिए ताकि कृषि क्षेत्र की स्थिरता, समृद्धि और सामाजिक उत्थान को सुनिश्चित किया जा सके। इसके अलावा, किसानों के संगठन और उनकी सहायता को बढ़ाना भी अत्यंत महत्वपूर्ण है ताकि उन्हें अपने हितों की रक्षा करने और अपने अधिकारों की रक्षा करने का सामर्थ्य प्राप्त हो। अंत में समाधानों के साथ समर्थनशील और सहयोगी दृष्टिकोण से हम समस्याओं का समाधान कर सकते हैं और भारत के कृषि क्षेत्र को नई ऊर्जा और दिशा प्रदान कर सकते हैं।

संदर्भ

1. गुहा,रामचन्द्रन (1989)। '' द अनक्वाईट वुकस्: इकोलोजिकल चेन्ज एण्ड पीजेन्ट रेजिस्टेन्स इन द हिमालया'' युनिवसिटी आफ कैलिफोर्नियां।
2. नागराज, के. (2008)। ''फारमर्स सुसाइडस एण्ड द अग्रेरियन क्राइसेस इन इण्डियाः एन एक्सप्लोरेटरी स्टडी।'' इकोनामिक एण्ड पोलिटीकल विकली, 43(26/27) 2601–2610.
3. स्वामीनाथन, एम0एस0(2009)। ''अग्रेरियन क्राइसेस इन इण्डिया'' एकाडेमिक फाउण्डेसन।
4. राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय (एनएसएसओ)। (विभिन्न वर्ष)। भारतीय कृषि के विभिन्न पहलुओं पर रिपोर्ट। भारत सरकार।
5. राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड)। (विभिन्न वर्ष)। ग्रामीण ऋणग्रस्तता, ऋण तक पहुंच और कृषि वित्त पर रिपोर्ट। भारत सरकार।
6. विजय हनमंत होन्कालस्कर, निखिलेश डी. बागड़े, शिरीश बी. केदारे, (2018), कृषि संकट को समझना– एक भागीदारी और गुणात्मक प्रणालीगत विश्लेषण, जर्नल ऑफ एनिमल साइंस (मैक्रोथिंक इंस्टीट्यूट, इंक) –वॉल्यूम 6, आईएसएस–1, पीपी 260–297.